सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 156

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 35-36
जून–जुलाई – 2017

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरु पूर्णिमा
चालक, मालिक, पालक (07.03.1962)

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

प्रत्येक माता–पिता की इच्छा यह होती है कि उनके बच्चों की पढ़ाई अच्छी हो और उनके भावी जीवन में (भविष्य में) उन्हें किसी भी चीज की कमी ना हो। परन्तु बच्चों की परवरिश करने से माता–पिता की जिम्मेदारी समाप्त नही होती। माता–पिता ने अपने बच्चों पर देवऋणानुबंध के संस्कार बचपन से ही किए तो ही बच्चों की भावी जिन्दगी अच्छी कटेगी। परन्तु इसमें सवाल यह उठता हैं कि आप आपके परिवार के कौन है, चालक मालिक या पालक? अगर आप चालक (चलाने वाला) होंगे तो आपका परिवार आपके अनुसार चलेगा। अगर आप अपने परिवार के मालिक होंगे तो परिवार की संपूर्ण जिम्मेदारी आपकी है इसका आपको एहसास होगा। परन्तु ऐसे 'मालिक' की भी जिम्मेदारी किसी और पर होती ही है। देवादिक के ऋणानुबंध ने चालना (स्फूर्ति) दी तो इस देह का मालिक याने जीव (शक्ति) है उसका धर्म इस देह के अंदर चालना (स्फूर्ति) निर्माण करने का होता है।

आपकी अपेक्षाऐं कौन पूरी करेगा?आज जीवन का माध्यम पैसा है। परन्तु यह बाहरी अंग है। पैसा होगा तो आप वस्तु निर्माण करोगे (लाओगे) परन्तु पैसे से आपकी जिन्दगी की कमियाँ पूरी नहीं होगी। आप छोटे बच्चे को कोई खिलौना अथवा कार लाकर दे दोगे परन्तु क्या आप उसे उत्तम जीवन दे सकोगे?उसके लिए अंतर्यामी (अंदर) उस शक्ति की पूंजी (संचय) है या नही इसका विचार करना चाहिए। जन्मऋणानुबंध जोड़कर कर्मऋणानुबंध पूरा करना होता है। आप खुद अन्न ग्रहण करके उस अन्न का समाधान अपने बच्चे को नहीं दे सकते तो फिर आप, आपने की हुई उपासना उसे कैसे दे सकोगे?आपका खुद का विमोचन होने के बाद आपका देवऋणानुबंध अगर शेष रहा तो ही वह आप अपने बेटे को दे सकोगे। किसी

के साथ लेन–देन नही रहा तो ही देवऋणानुबंध बचा रहता है। परन्तु यह कब होगा? तो पुनश्च (फिरसे) वैसे कर्म नहीं हुए तो। परन्तु वैसे कर्म तो रोज हो रहे है, फिर आपके पास कितना पुण्य बचेगा और उसमें से आप अपने बालबच्चों को कितना दे पाओगे?

परिवार के केवल एक ही व्यक्ति द्वारा उपासना करके काम नही चलेगा सब लोगों को हाथ बटाना चाहिए, तोहि परिवार का उद्धार हो सकेगा। मानो इस जगह 5 बिजली के बल्ब है और बिजली का प्रवाह (शक्ति) सब के साथ जोड़ा गया है। मुख्य बटन दबाने से ये 5 बल्ब एक साथ प्रकाशमान होते है। क्या आपकी उपासना की शक्ति का प्रवाह (करंट) आपसे लेकर झूले में बैठे बालक तक पहुँच सकता है? चलो एक बार मान लिया कि उपासना का प्रवाह उसतक पहुँचता है, परन्तु इसमें जो एक धोखा है वह आपके ध्यान में नही आता कि अगर मुख्य बटन का फ्यूज उड गया तो सारे बल्ब बुझ जाएंगे। उपासना करने वाले घर के दादाजी याने मुखिया अगर चल बसे तो परिवार में सब तरफ अंधेरा छा जाएगा। इससे आप समझ जाओगे कि प्रत्येक बल्ब के लिए अलग बटन आवश्यक होता है, मतलब यह कि परिवार के हर एक को उपासना करनी ही चाहिए। आप खुद ही ऋणमुक्त नही है तो आप दूसरों को क्या ऋणमुक्त करोगे? आप अपने पिताजी के पास किसी चीज की जिद करते हो फिर पिताजी गुस्सा करते है। फिर पिताजी जब दफ्तर जाते है तब आप माँ से अपनी माँग (जिद) पूरी करवा लेते हो। किसी समय उसी बात को लेकर पिताजी ने माँ के सामने आपपर गुस्सा किया था इसलिए इस समय माँ आपपर गुस्सा नही कर सकती, और उसे आपकी जिद पूरी करनी पड़ती है। जिस तरह परिवार का छोटा बच्चा पिताजी से बात नहीं बनी तो माँ के पास जाता है वैसे ही मेरे द्वारा काम नही हो रहा है यह देखकर आप भी हाजीबाबा के पास दौड़ लगाते हो यह मुझे मालूम है।

जिस तरह घर में अनाज कम पड़ गया तो उस कमी को पूरा करने के लिए कितना अनाज लाना चाहिए इसका हिसाब (मापदंड) हो सकता है वैसे उपासना कितनी कम पड़ रही है यह नापने के लिए क्यों कोई नापदंड नही है? आप जितनी पूजा–अर्चा करते हो उतनी बच्चों को करने की जरूरत नहीं है। परन्तु बच्चों ने देवदेवताओं के स्तोत्र का उच्चारण किया अथवा बच्चों की मर्जी के अनुसार उनसे नामस्मरण करवाया तो भी उससे बच्चे आपको होने वाली तकलीफ 20% ही कम कर सकेंगे। बच्चों की ज्ञानेंद्रियाँ और कर्मेंद्रियाँ आकार ले रही होती हैं, उसे इच्छा–वासना–विकार इनका ज्ञान नही होता, ऐसे समय उन्हें एक ही बात का पता होता है कि ''ईश्वर का नाम लेना है।'' इसलिए छोटे ध्रुव को ईश्वर मिले। छोटे बच्चे को ईश्वर 12 महीनों में मिले तो बडों को अथवा साधकों को ईश्वर 12 साल बाद मिलेंगे।

आज आपका वजन 120 पौंड है। परन्तु जब आपने जन्म लिया तब आपका वजन इतना नही था, केवल 8 पौंड था। मतलब आपका वजन 120 पौंड होने के लिए 25 साल लग गए। मेरे सामने बैठकर आप मुझे कहते हो कि मेरे सिर पर 300 पौंड वजन (भार) का दुःख है। परन्तु इतने भार का दुःख कितने समय में बना यह आप बताते नही हो क्यों कि आपको दुःख का कालावधी पता नहीं है। आपने जब आठ पौंड वजन के साथ जन्म लिया, उस समय आपके साथ कर्मऋणानुबंध था तो भी जब काया वाचा पूरी तरह बनकर आपका देह बन गया, तब तो यह 300 पौंड की दुःख की गठरी आपके साथ नही थी। जन्म से लेकर आज तक आपने ही अपने दुःख को बढ़ाया है। अब आप अपने दुःख की केवल छाया दिखा रहे हो परन्तु उसका मूल रूप क्यों नही दिखाते? अपने सुख के बारे में बताना यह आपने सीखा नही इसलिए दुःख कैसे व्यक्त करना यह भी आपकी समझ में नहीं आता है।

ईश्वर ने आदिमाया मे स्थित 'आधिदैवत' का परिमल, स्त्री में निर्माण किया है। परन्तु स्त्री के बारे में, 'एक उपभोग्य वस्तु' इस विचार के अलावा दूसरा विचार आपके मन में आता ही नही। चलो आजतक आपने गृहस्थी निभाई, बाल–बच्चे भी हो गए, इसलिए अब तो उन बच्चों की माँ की ओर क्या आप पवित्र भावना से देखते हो?

जब गर्भधारणा होती है उस समय जिन जीवों का अन्नमय कोष बाकी है, उन्हें ही ईश्वर भेजता है, अन्य जीव शरीर के बिना इस वातावरण में होते है और खुद को मुक्त करने के प्रयत्न में लगे रहते है। अन्नमय कोष लेकर आए हुए जीव का जीवन अन्नमय कोष से ही होता है, क्योंकि माता जो अन्न सेवन (ग्रहण) करती है,

उससे उस जीव की परवरिश होती है और जीव को सब कुछ पता होता है। जीव की एक ही इच्छा होती है कि, ''पिछले जन्म में मेरे हाथ से जो कुछ हुआ वह पुनश्च (फिरसे) इस जन्म में ना हो'', वह इसकी कोशिश करता रहता है।

अभिमन्यू जब गर्भ अवस्था में था, तब एक बार श्रीकृष्ण उनकी बहन व अभिमन्यू की माँ सुभद्रा को चक्रव्यूह की जानकारी दे रहे थे। उनके कथन के दरम्यान सुभद्रा को नींद आई, वह सो गई परन्तु गर्भ याने जीव सुन ही रहा था। उसके 18 साल बाद युद्ध के समय द्रोणाचार्य जी ने चक्रव्यूह की रचना की। उस समय चक्रव्यूह का भेद कौन करेगा? यह सवाल जब उठा तब श्रीकृश्ण ने अभिमन्यू का नाम सुझाया। वह सुनकर अभिमन्यू के पिता अर्जुन को आश्चर्य हुआ। तब 'अभिमन्यू को यह ज्ञान उसकी गर्भावस्था में हुआ है' यह जानकारी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दी। अभिमन्यू के जीव पर ज्ञान का संस्कार हो जाने के कारण जब आपत्ती सामने आई तब उसका वह ज्ञान सामने प्रकट हुआ व अभिमन्यू ने चक्रव्यूह का भेद किया। आज जीव के जन्म लेने के बाद हम 'नर' का 'नारायण' करने का प्रयत्न करते है परन्तु वह संभव नही है। क्योंकि एक बार देह धारण किया तो जीव बद्ध हो जाता है और देहत्याग होने तक उसमें कुछ भी बदल नही हो सकता। यदि गर्भवती माँ ने आराम कुर्सी पर बैठकर ही नवनाथ चरित्र पढ़ा तो आने वाला बालक कुल का उद्धार किए बिना नहीं रहेगा। क्योंकि गर्भावस्था की उस परिस्थिति में गर्भ की अवस्था सब कुछ छोड़कर केवल ईश्वर की अवस्था याने चैतन्य अवस्था होती है, और 25 साल बाद, उसी देह की अवस्था 'ईश्वर' छोड़कर बाकी सब कुछ होती है। वह अंशमात्र शक्ति आसपास के वातावरण के अनुसार बढ़ती है।

बेटा सज्ञान हो, बुढापें में वह हमें सुख दे यह आपकी भावना होती है। परन्तु अगर आप इस घड़ी में सुख चाहिए इसलिए बाबा से मिलते हो तो वृद्धावस्था में आपको सुख कौन देगा?बाबा या आपका बेटा? 'गद्दी पर' (कार्यकेंद्र पर) जब आप आते हो तब यहाँ आपको इज्जत दी जाती है, आपको सुख मिलता है परन्तु आपकी अपने घर जाते ही परिस्थिति अलग हो जाती है। इसका कारण यह है कि आप मेरे सामने बैठकर 'मुझे ठीक कीजिए' कहते हो परन्तु अपने बेटे के बारे में कुछ कहते ही नही। वास्तव में आपको अपने बेटे के प्रति का कर्तव्य निभाते समय उसके पीछे कोई भी अपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

जीव जब गर्भावस्था में होता है तब उसमें आचार–विचार नहीं होते हैं, परन्तु आपके अन्नमय कोषकी वासना सूक्ष्म रूप से उसमें होती है, और जितने प्रमाण में गर्भ का अन्नमयकोष अशुद्ध उतने ही प्रमाण में गर्भ अशुद्ध होता है। परन्तु उस समय सूक्ष्म रूप से मौजूद वासना से गर्भ (जीव) अपने पिछले जन्म के 60 साल की अवधि की अन्न वासना खींच लेता है। उस समय अगर गर्भ लड्डू चाहता होगा तो वह माँगने के लिए, उसके पास वाचा की (बोलने की) शक्ति नही होती इसलिए उससमय गर्भ माध्यम के तौर पर माता का उपयोग करता है। गर्भ को कर्मज्ञान नहीं होता है, परन्तु वह माँ की शक्ति से अपनी भावना व्यक्त करता है। उसके बाद वह शेष चार कोषों का स्वीकार करने लगता है। अन्नमयकोष 1 से 3 महीने की अवधि के दरम्यान जब धारण होता है तब माता को अन्नवासना (कुछ खाने की वासना) होती है और उल्टी हो जाती है। 3 से 5 महीने में प्राणमय कोष धारण होता है। इस समय माता की छाती पर दबाव आता है, सांस में भारीपन आ जाता है। 5 से 7 महीने के काल में मनोमय कोष धारण होता है। इस काल में माता ने जिसे सात जन्मों का साथ निभाने का वचन दिया है, ऐसे अपने पति के बारे में भी नहीं सोचती है। उस समय उसका जीव चराचर में कहीं भी नही होता तो वह केवल उसके गर्भ के जीव में ही होता है, जिस की वजह से गर्भ में मनोमय कोष धारण होता है। 7 से 8 महीने में विज्ञानमय कोष धारण होता है। इस काल में स्त्री को एक बात दो दफा बतानी पड़ती है, विस्मृति होती है इसलिए याद कराना पड़ता है। ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति के आधे भाग पर जीव की छाया (प्रतिबिंब) होती है। आनंदमय कोष 9वें महीने में यानी जब सर्व अवयवों का पूरा विकास हो गया है उस समय धारण होता है। इस समय माता का व जीव का आनंद एक ही होता है। इस तरह से 65 से 70 साल की अवधि के जीवन के ऋणानुबंध को अधिष्ठान प्राप्त करा देने वाली माँ को कौनसा स्थान देना चाहिए इसका आपको विचार करना चाहिए।

उपासना होगी तो ही पालन, पोषण और विकास होगा। बदलाव होने के लिए प्रथमतः खुद में बदलाव आना चाहिए। जन्म व कर्म ऋणानुबंध प्रत्यक्ष उस चैतन्य में देखना इसे ही साक्षात्कार कहते है और तब उन

दोनों का लय हो जाता है, वासना चली जाती है व केवल ईश्वर का अधिष्ठान रहता है।

जन्म–कर्म व जीव, साथ–साथ एक ही तत्त्व से रहने चाहिए। साईकिल के दो पहिये याने जन्म कर्म ऋणानुबंध व पैडल याने आपका जीव। आप पहियों में (wheel) ज्यादा हवा भरते हो। पिछला पहिया टूटा (बर्स्ट हुआ) तो आप आगे के पहिये में और हवा भरते हो जिसके कारण अधिक शक्ति का उपयोग करके पॅडल चलाए बिना आप इच्छित स्थल पर पहुँच नही सकते। आप अपेक्षा लेकर ही ईश्वर के पास आए हो और इतना ज्ञान पाने के बाद भी अपेक्षा ही कर रहे हो। मेरे बारे में आप जो कुछ भला–बुरा बोलते हो वह 24 घंटे में मुझे समझ आ जाता है। (पता लग जाता है) तो मैं मुलाकात द्वारा आपको जो बताता हूँ वह कम से कम 48 अथवा 72 घंटों में आपकी समझ में आना चाहिए।

फलश्रुति तो दी ही थी परन्तु चालक ने चालना नही दी, मालिक कौन, यह समझ में नही आया और अगर इसे पालक (पालने वाला) कहे तो यह खुद ही दूसरे के पास 25 साल से नौकरी कर रहा है। चालक, मालक व पालक इन तीनों बातों से जो जुदा है वही परमात्मा का भक्त है। प्यास लगी फिर दूसरों से क्यों माँगना, सब चीजों से जो जुदा वही अल्ला का भक्त है। तीनों जीवन पर जिसने संयम पाया वही सही मायने में ईश्वर भक्त है।

मालिक यह जीव है। चालक याने कर्मेंद्रियाँ व ज्ञानेंद्रियाँ – ये इन्द्रिय 'यह क्या, वह क्या?' इस तरह से सदैव चालना देती रहती हैं। पालक याने पूरा शरीर (काया)। पालक को याने शरीर को आप शर्ट पहनाते हो। परन्तु उस शरीर के मालिक का क्या?उस मालिक को क्या आप कभी भी कुछ नहीं पहनाओगे?क्या कुछ ऐसा है कि, जिसके बारे में उसे कुछ पता नहीं?जीव को तो सब ज्ञान है।

बाबा ने एक ही ब्रह्मवाक्य कहा कि, 'जया मनी जैसा भाव, तया तैसा अनुभव' मतलब जिसके मन में जैसा भाव उसे वैसा अनुभव। जब सब कुछ ठीक होता है, उस समय जिस भावना से पूजा करते हो, उसी भावना के साथ संकट काल में भी पूजा करनेवाला भक्त चाहिए। बाबा ने जो कहा उसके एकदम विपरीत आप बोलते हो कि, 'हमें बाबा का जैसा अनुभव वैसा हमारा बाबा के प्रति भाव।' बाबा ने क्या कहा व आप क्या बोलते हो इसका विचार कीजिए। आप साक्षात् गुरूतत्त्व बदलते हो फिर संकट जाएगा या आएगा? आप इस तरह से उल्टे पेश आते हो इसलिए जब आप मेरे सामने 'मैं दुःखी हूँ' करके चिल्लाने लगते हो तब हम भी आपकी बातों का उल्टा अर्थ लेते हैं (निकालते है) और कहते हैं ''आप सुखी हो ना?बहुत अच्छा!''

बाबा ने अपने शब्दों में कभी बदलाव नही किया। घड़ी बंद हो गई तो चावी लगाकर फिर चालू हो जाती है परन्तु एक बार आप रूक गए तो फिर चावी नही भर सकते, आपको तो तुरन्त शमशान ले जाना पड़ता है। आप जब मख्खन खरीदते हो तब दुकानदार, अगर तोल के अनुसार मख्खन कम पड़ रहा हो तो उसमें और मख्खन डालकर पूरे तोल का (वजन का) मख्खन आपको देता है। उसके बाद पहले तोला हुआ मख्खन व बाद में डाला हुआ मख्खन दोनों मख्खन घुलमिल जाते है। आपका जीवन इस मख्खन की तरह है। आप बाहर कहीं गए तो क्षण में (पल में) उस जीवन में अथवा उस वातावरण में घुलमिल जाते हो। परन्तु अगर आप सुनार के पास गए, और तोलते समय अगर 1 तोला सोना पूरा ना हुआ तो सुनार और एक ग्राम सोने का टुकड़ा तोल के तराजू में डालता है। परन्तु पहला सोना व बाद में डाला हुआ एक ग्राम सोने का टुकड़ा भट्टी में डाले बिना एकरूप नही होते है। उसी तरह से सद्गुरू के चरणों में आने के बाद हम तुरंत आकर आपसे नहीं चिपकेंगे तो आपको भट्टी में डालने के बाद ही हम आपसे एकरूप होंगे, हम तुम्हारे लिए नही गलेंगे परन्तु तुम्हें हमारे लिए गलना पड़ेगा, यह ध्यान में रहे।

।। शुभं भवतु।।

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था